॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

सन्तवाणी

[द्वितीय शतक]

परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराजके

अनमोल वचन

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

मैं भगवान्‌का हूँ—ऐसा भीतरसे मान लें तो आपकी अवस्था बदल जायगी, आपका पूरा परिवर्तन हो जायगा, आपको शान्ति मिल जायगी, आपकी शंका मिट जायगी, सन्देह मिट जायगा!

'हे नाथ! मैं आपका हूँ'—इतना भीतरसे मान लो तो संसारका सम्बन्ध स्वतः छूट जायगा। संसारको छोड़नेके लिये आपको प्रयत्न नहीं करना पड़ेगा।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

माना हुआ सम्बन्ध ही बन्धन है। शरीरके साथ सम्बन्ध तोड़ लें तो आज ही मुक्ति है। सम्बन्ध स्वीकार करनेके कारण मरे हुए सम्बन्धी भी याद आते हैं और सम्बन्ध स्वीकार न करनेके कारण जीते हुए भगवान् भी याद नहीं आते!

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

एक मार्मिक बात है कि जबतक परमात्माकी प्राप्ति नहीं हो जाती, तबतक किसीसे भी सम्बन्ध जोड़ना खतरनाक है! जब पहलेका सम्बन्ध भी आपसे नहीं टूटा तो फिर नया सम्बन्ध क्यों जोड़ते हो? पुराना सम्बन्ध भी आपके लिये टूटना मुश्किल हो गया, फिर नया सम्बन्ध जोड़ोगे तो क्या दशा होगी? बड़ी भारी आफत हो जायगी!

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

'पर' को अपना मानना पराधीनताका मूल है। जबतक हम शरीरको अपना मानते रहेंगे, तबतक पराधीनता कभी छूटेगी नहीं, छूट सकती ही नहीं। शरीरके छूटनेपर भी पराधीनता नहीं छूटेगी।

संसारका आश्रय लेनेसे पराधीनता और भगवान्‌का आश्रय लेनेसे स्वाधीनता प्राप्त होती है।

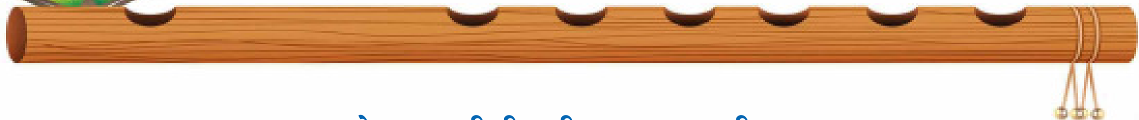


—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥



हमें तो वर्षोंके बाद यह सार बात जँची है कि भगवान्‌को अपना मानो। भगवान् अपने हैं, और कोई अपना नहीं है। यह हमारे मनकी बात है। इसके सिवाय और हम ज्यादा जानते नहीं।



—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

जो 'शरीर मैं-मेरा नहीं' आदि कुछ नहीं जानते, पढ़े-लिखे बिलकुल नहीं हैं, काला अक्षर भैंस बराबर है, वे भी 'हे नाथ! हे मेरे नाथ!' पुकारने लग जायँ तो सब ठीक हो जायगा!



—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

आप सत्संग करने आये हो तो इतनी बात मान लो कि हम जैसे भी हैं, भगवान्‌के हैं। एक भगवान्‌को अपना न माननेसे दुःख पाना ही पड़ेगा, इसमें सन्देह नहीं है। जगह-जगह जन्मोगे, मरोगे, दुःख पाओगे! भगवान्‌के हो गये तो अब मौज करो! अब कुछ करनेकी जरूरत नहीं। भगवान्‌को अपना मान लो तो भगवान् भी राजी, सन्त भी राजी, सब लोग राजी!



—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

मनुष्यशरीरकी विशेषता और तरहकी है, पर हमने इसे और तरहकी विशेषता दे दी। ‘मैं शरीर हूँ, शरीर मेरा है’—ऐसा माननेमें शरीरकी महिमा नहीं है। शरीरकी महिमा इस विवेकको लेकर है कि इस शरीरके साथ मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

संसारके सब सम्बन्ध मुक्त करनेवाले भी हैं और बाँधनेवाले भी। केवल परमार्थ (सेवा) करनेके लिये माना हुआ सम्बन्ध मुक्त करनेवाला और स्वार्थके लिये माना हुआ सम्बन्ध बाँधनेवाला होता है।

–परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज



॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥



जो भगवान्‌को अपना मान लेता है, वह संसारसे ऊँचा उठ जाता है, सन्त–महात्मा हो जाता है। उसको शान्ति मिल जाती है, आनन्द मिल जाता है। उसको किसी चीजकी परवाह नहीं रहती। इसलिये भगवान्‌को अपना मानकर मस्त हो जाओ। 'मैं भगवान्‌का हूँ'—इस बातको भूलो मत तो भगवान् जरूर मिलेंगे। अपने–आप सत्संग मिलेगा, सन्त–महात्मा मिलेंगे।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

अन्तमें सभी साधकोंकी एक स्थिति होगी। साधक अपने-अपने सम्प्रदाय, पद्धति, ज्ञानके अनुसार मुक्त हो जाते हैं, फिर परमात्माकी तरफसे मुक्त होते हैं तो वहाँ सब-के-सब एक हो जाते हैं। वहाँ सम्प्रदायका भेद नहीं रहता। वह स्थिति हमारी स्वाभाविक है।

पहले सबको अपनी अलग-अलग स्थिति दीखती है, पर वह बनावटी होती है। असली स्थिति सबकी एक होती है। परन्तु परमात्माके प्राप्त होनेपर ही यह भेद खुलता है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

कामनाका त्याग करनेसे नया प्रारब्ध बनता है। जीनेकी इच्छा नहीं करनेसे उम्र बढ़ती है। किसी भी चीजकी इच्छा न रखनेसे सब चीजें आती हैं। इच्छा रखनेवाले दुःख पाते हैं और इच्छा न रखनेवाले मौजसे रहते हैं!

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज



॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

जैसे आपने बड़ी मेहनतसे कुआँ खोदा, पर उसमेंसे पानी निकला ही नहीं तो अब उस कुएँको आप किस काममें लोगे? पानीके बिना कुआँ कोई कामका नहीं होता, ऐसे ही भगवान्‌के भजनके बिना मनुष्यशरीर कोई कामका नहीं है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥



जैसे, बिजली कितनी खर्च हुई—इसका पता मीटरसे लग जाता है। कोई व्यक्ति कभी भी, किसी भी समय बिजली खर्च करे और कितना ही छिपकर बिजली खर्च करे, पर मीटरमें सब अंकित हो जाता है। ऐसे ही पाप-पुण्यको अंकित करनेवाला विलक्षण मीटर सबके अन्तःकरणमें है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

लगन हो तो परमात्मा हरेकको प्राप्त हो सकते हैं। वे तो मिलनेके लिये तैयार बैठे हैं! लगन नहीं है—इसके सिवाय परमात्मप्राप्तिमें कोई कठिनता नहीं है। लगन हो तो सन्त-महात्मा भी मिल जायँगे, पर लगनके बिना वे मिलते हुए भी काम नहीं आयेंगे।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज



॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

दूसरे लोग जन्मते हैं तो शरीर पहले बालक होता है, फिर बड़ा होकर युवा हो जाता है, फिर वृद्ध हो जाता है और फिर मर जाता है। परन्तु भगवान्‌में ये परिवर्तन नहीं होते। वे अवतार लेकर बाललीला करते हैं और किशोर-अवस्था (१५ वर्षकी अवस्था)-तक बढ़नेकी लीला करते हैं। किशोर-अवस्थातक पहुँचनेके बाद फिर वे नित्य किशोर ही रहते हैं। सैकड़ों वर्ष बीतने पर भी भगवान् वैसे ही सुन्दर-स्वरूप रहते हैं।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

श्रीकृष्णजन्माष्टमीकी हार्दिक बधाई—राजेन्द्र कुमार धवन

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

आप खुद भगवान्‌के अंश हैं। आपके और भगवान्‌के बीचमें मन नहीं है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

‘अनन्तकी ओर’ पुस्तकसे

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

शरीर परिवार, समाज और संसारकी सेवाके काम आयेगा, इसके सिवाय किसी काम नहीं आयेगा। साधकके जीवनमें शरीरका कोई उपयोग नहीं है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

यदि दूकानदार सुबह ही हजार रुपये कमा ले तो वह दिनभर दूकान बन्द नहीं करता। पर आप सुबह थोड़ी देर नामजप, पूजा-पाठ कर लेते हो, फिर दिनभर निकम्मे बैठे रहते हो कि बस, हमने नित्यकर्म कर लिया। ऐसी नीयतसे भगवान् मिल जायँगे क्या ?

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

हरेक काममें 'मेरेको क्या लाभ होगा'—इसको छोड़कर यह सोचो कि इससे दूसरोंको क्या लाभ होगा?

जिस काममें अपने स्वार्थका त्याग और दूसरेका हित हो, वह काम आँख मीचकर करो; क्योंकि वही सबसे बढ़िया काम है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

शरीर और उसकी क्रियासे कल्याण नहीं होगा। कल्याण संसारकी सेवासे होगा, भगवान्‌के सम्बन्धसे होगा, निष्कामभावसे होगा, त्यागके भावसे होगा। श्रवण, मनन, निदिध्यासन, ध्यान, समाधिसे परमात्माकी प्राप्ति नहीं होगी।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

‘मेरा कुछ नहीं है, मेरेको कुछ नहीं चाहिये’—यह बात मान लो तो आप निहाल हो जाओगे। यह बहुत ऊँची और तत्काल शान्ति देनेवाली बात है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

अपनी वस्तु वही हो सकती है, जो सदा हमारे साथ रहे और हम सदा उसके साथ रहें। जो कभी हमारेसे अलग न हो और हम कभी उससे अलग न हों। ऐसी वस्तु भगवान् ही हो सकते हैं।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

जैसे किसान सुबह होते ही हल चलाना शुरू कर देता है, ऐसे ही मनुष्यको बचपनसे ही साधन शुरू कर देना चाहिये।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

जबतक साधकका यह भाव होता है कि मैंने बहुत भजन किया, तबतक भजन शुरू नहीं हुआ! भजन शुरू होनेपर यह मालूम नहीं होगा कि मैंने भजन किया है। भगवान्‌का भजन करनेवालेको यह पता ही नहीं लगता कि हम भजन करनेवाले हैं।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

मैं परमात्माका हूँ—यह चिन्तन करनेकी बात नहीं है, प्रत्युत माननेकी बात है।

दो और दो चार ही होते हैं, इसमें चिन्तन करनेकी क्या बात है?

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

श्रोता—

कोई ऐसी युक्ति बता दें, जिससे परमात्मा की प्राप्ति हो जाय।

स्वामीजी—

परमात्मा की प्राप्ति में युक्ति काम नहीं करती, लगन काम करती है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

जब भगवान्
की तरफ
रुचि हो
जाय, वही
पवित्र दिन
है, वही
सम्पत्ति है।



जब भगवान्
की तरफ
रुचि नहीं
हो, वही
काला दिन
है, वही
विपत्ति है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥



जैसे घरसे दूर जानेपर एक उतावली लगती है कि जल्दी घर चलो, ऐसे भगवान्‌के पास जानेकी चटपटी क्यों नहीं लगती? जैसे कोई प्रिय स्वजन आता हो तो उसके आनेकी प्रतीक्षा करते हैं कि अब आयेंगे.....अब आयेंगे, ऐसे भगवान्‌के आनेकी प्रतीक्षा क्यों नहीं होती? अपने असली घरपर जल्दी पहुँचें, भगवान् जल्दी मिलें, ऐसी मनमें चटपटी लगनी चाहिये।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

अगर माँ बालकके दोषोंकी तरफ देखे तो क्या बालकका पालन हो सकता है? बालक रोता है तो अपनी मूर्खतासे रोता है। भगवान् कृपा करते हैं तो नीयत देखते हैं, गलती नहीं देखते।

भगवान् बिना कारण कृपा करनेवाले हैं—यह बात हरदम याद रहे। अपनेमें कमीको देखकर हमें दुःख तब होता है, जब यह भूल जाते हैं कि भगवान् ‘कारणरहित कृपालु’ हैं।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

भगवान्‌से रात-दिन एक ही प्रार्थना करो कि 'हे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं'। मनसे हरदम कहते रहो। भगवान्‌से यही माँगो कि आपको भूलूँ नहीं। भगवान्‌की कृपासे सब काम ठीक होगा। आपको पता ही नहीं लगेगा, अनजानपनेमें भी आप सन्त हो जाओगे!

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

जबतक अपना विचार परमात्मप्राप्तिका नहीं होगा, तबतक बातें कहने-सुननेसे काम नहीं होगा, कोई उपाय काम नहीं देगा। परमात्मप्राप्तिकी जोरदार अभिलाषा होनेपर ही उपाय काम देते हैं, नहीं तो बढ़िया-से-बढ़िया उपाय भी काम नहीं देगा।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥



मैंने पुस्तकें भी पढ़ी हैं, सन्तोंका संग भी किया है, जहाँ कहीं अच्छी बातें सुननेको मिलीं, वहाँ गया भी हूँ। बहुत बातें देख करके, पढ़ करके, सुन करके, समझ करके, विचार करके मैंने निर्णय किया है कि भगवान्‌के समान अपना कोई नहीं है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

आजतक भगवान्‌के विषयमें जितना आपने जाना है, जितनी आपकी समझ है, उसी रूपको याद करो और 'हे नाथ! हे प्रभो!' पुकारो। इतना सरल कोई रास्ता है नहीं।



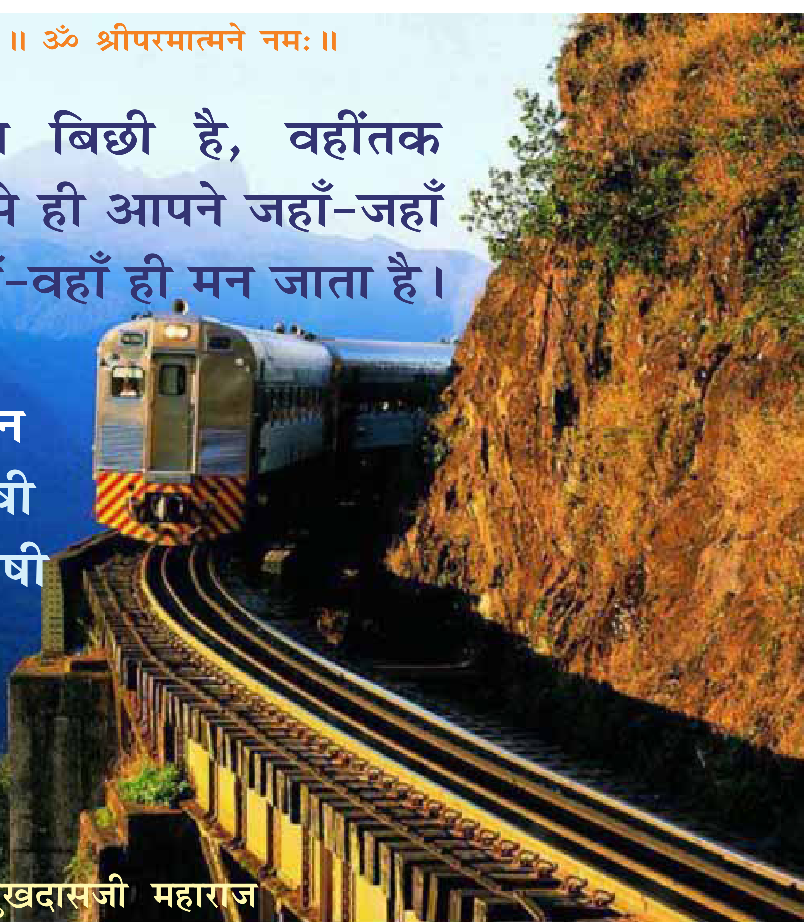
—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

शरीरको ठीक रखनेके लिये आप घी-दूध आदिका सेवन करते हैं, फिर भी वह साथमें नहीं रहता। परन्तु भगवान्‌के लिये क्या आपने घी-दूध आदिका सेवन किया? फिर भी वे सदा साथमें रहते हैं!

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥



जैसे जहाँतक लाइन बिछी है, वहींतक रेलगाड़ी जाती है, ऐसे ही आपने जहाँ-जहाँ सम्बन्ध जोड़ा है, वहाँ-वहाँ ही मन जाता है। पहले आप सम्बन्ध जोड़ते हैं, फिर वहाँ मन जाता है। अतः मन दोषी नहीं है, प्रत्युत आप दोषी हैं। मन खराब नहीं है, आप खराब हो!

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

जो होता है, वह प्रारब्धके अनुसार ही होता है। प्रारब्धसे इधर-उधर होता ही नहीं। आप कितना ही उद्योग करें, जो होनेवाला है, वह होगा ही—यह सिद्धान्त है। परन्तु अपना उद्योग कभी छोड़ना नहीं चाहिये। अच्छे कामके लिये अपना उद्योग करते रहना चाहिये, पर चिन्ता नहीं करनी चाहिये। जो होनेवाला है, वैसा ही होगा—यह जो प्रारब्धकी बात कही जाती है, यह चिन्ता दूर करनेके लिये है, अपना उद्योग छोड़नेके लिये नहीं।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

भगवान्‌को प्रकट करनेके लिये, उनका प्रेम प्राप्त करनेके लिये भगवान्‌को अपना मानना बहुत जरूरी है। जैसे बालक कहता है कि माँ मेरी है, ऐसे भगवान् मेरे हैं। भगवान्‌में मेरापन प्रेमका मन्त्र है, जिससे भगवान् प्रकट हो जाते हैं।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज



॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

जो संसारकी गरज नहीं करता, उसकी गरज संसार करता है। परन्तु जो संसारकी गरज करता है, उसको संसार चूसकर फेंक देता है!

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज



॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

आप अपनी मरजीसे कर्म करोगे तो फल आपकी मरजीसे नहीं मिलेगा, प्रत्युत कर्मके अनुसार मिलेगा। इसलिये 'करनेमें सावधान रहो और होनेमें प्रसन्न रहो'—ये दो बातें याद कर लो।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

ज्यों-ज्यों रुपयोंका महत्त्व बढ़ेगा, त्यों-त्यों आपकी दरिद्रता बढ़ेगी। ज्यों-ज्यों रुपये बढ़ेंगे, त्यों-त्यों घाटा बढ़ेगा और भगवान्‌के भजनमें लग जाओ तो घाटा दूर हो जायगा; आपका ही नहीं, आपके दर्शन करनेवालेका घाटा दूर हो जायगा!

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

अगर हमारेमें प्राणोंका मोह न रहे, जीनेकी इच्छा और मरनेका भय न रहे तो कोई बलवान् व्यक्ति हमारेपर अत्याचार नहीं कर सकेगा। यह सिद्धान्त है कि भौतिक बल कभी भी आध्यात्मिक बलपर विजय प्राप्त नहीं कर सकता।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

श्रोता—

मुक्तिका कोई सरल उपाय बताइये।

स्वामीजी—

हे नाथ, मैं आपका हूँ — ऐसा मान लो, फिर मुक्ति की चिन्ता मत करो।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

कोई भी आफत आये तो 'हे नाथ! हे नाथ!' पुकारो।

'हे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं' —यह एक मन्त्र है, जिसे सब भाई-बहन याद कर लो और बार-बार कहते रहो।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

यह मनुष्यशरीर तभी सफल होगा, जब पारमार्थिक कार्योंमें ज्यादा समय लगाओगे। इसलिये मेरा सभीसे कहना है कि पारमार्थिक कार्योंमें आप हृदय खोलकर, बड़े धैर्यसे, शान्तिसे समय लगाओ। पारमार्थिक बातोंका आदर करो। सांसारिक काम तो जल्दी-जल्दी करो, पर भजन-ध्यान शान्तिपूर्वक करो।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

भगवान्‌का देनेका जो तरीका है, वैसा किसीके पास नहीं है। वे जिसे जो वस्तु देते हैं, उसे वह वस्तु अपनी ही दीखती है कि शरीर मेरा ही है, इन्द्रियाँ मेरी ही हैं, मन-बुद्धि मेरे ही हैं।

विचार करें, यदि आँखें आपकी हैं तो चश्मा क्यों लगाते हो? शरीर आपका है तो उसे बीमार क्यों होने देते हो? मरने क्यों देते हो?

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

मनुष्य अनेक शास्त्र आदिके ज्ञानके कारण पूजनीय नहीं होता, प्रत्युत भगवान्‌के साथ सम्बन्ध होनेसे पूजनीय होता है। भगवान्‌के सम्बन्धका जो माहात्म्य है, वह माहात्म्य सद्‌गुण, ज्ञान आदिमें नहीं है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

जैसे एक कन्याके साथ सम्बन्ध (विवाह) होनेसे उसके पूरे कुटुम्ब (ससुराल)-के साथ सम्बन्ध हो जाता है, ऐसे ही एक शरीरके साथ सम्बन्ध होनेसे संसारमात्रके साथ सम्बन्ध हो जाता है। शरीरसे सम्बन्ध छूटते ही संसारमात्रसे सम्बन्ध छूट जाता है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज



॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

संसार पूरा है ही नहीं, फिर संसारकी पूरी चीज कैसे मिले? परमात्मा पूरे हैं, फिर वे अधूरे कैसे मिलें? संसार अधूरा ही मिलता है और परमात्मा पूरे ही मिलते हैं।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

भजन प्रकट करनेसे आफत आती है। भजन जितना गुप्त होता है, उतना तेज होता है।



साधककी प्रसिद्धि होना बहुत बड़ा विघ्न है। अतः साधकको प्रसिद्धिसे बचना चाहिये।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥



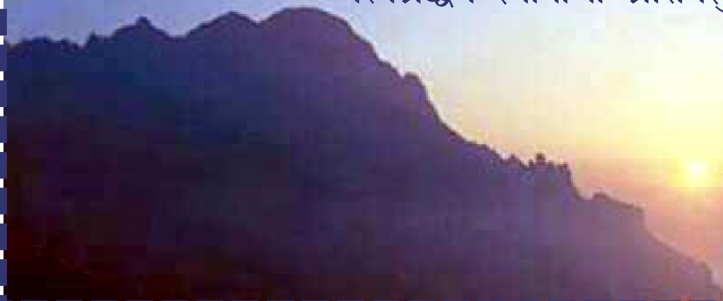
जो भगवान्‌की तरफ चलनेमें रोकते हैं, वे बहुत बड़ा अपराध करते हैं। ब्रह्माजीने ग्वालबालोंको भगवान्‌से अलग किया तो भगवान् ब्रह्माजीसे बोले ही नहीं! ऊँचे-से-ऊँचे पदपर स्थित ब्रह्माजीसे भी भगवान् नाराज हो गये। जब ब्रह्माजीका भी अपराध भगवान् सह नहीं सके, फिर आप-हम क्या चीज हैं?

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

एक किसान खेती करता है, पर
पहलेका धान न होनेसे भूखा मरता है,
और एक किसान खेती करता ही नहीं, पर
पहलेका धान होनेसे खाता है। पहलेका बोया हुआ
अभी खाता है, और अभीका बोया हुआ आगे खायेगा।
ऐसे ही अभी जो तिरस्कार, अपमान मिलता है, यह
पहलेका प्रारब्ध है। अभी जो अच्छा काम
करते हैं, उसका फल आगे मिलेगा।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज



॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

जिसके मुखमें नमककी डली रखी हुई है, वह मिश्रीको नहीं समझ सकता। भीतरमें संसारकी सत्ता, महत्ता और अपनापन पकड़ा हुआ है, इसलिये पारमार्थिक बात समझमें नहीं आती।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

यह सिद्धान्त है कि नौकर अच्छा हो, पर मालिक तिरस्कारपूर्वक उसे निकाल दे तो फिर उसे अच्छा नौकर नहीं मिलेगा। ऐसे ही मालिक अच्छा हो, पर नौकर उसका तिरस्कार कर दे तो फिर उसे अच्छा मालिक नहीं मिलेगा। इसी प्रकार मनुष्य परमात्मप्राप्ति किये बिना शरीरको सांसारिक भोग और संग्रहमें ही खो देता है तो फिर उसे मनुष्यशरीर नहीं मिलेगा।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

मूलमें साधककी भूखकी कमी है। साधक ईश्वर, समय, भाग्य आदिकी कमी देखता है, अपनी कमी नहीं देखता और निराश हो जाता है। सच्ची भूख हो तो मार्ग अवश्य मिलता है, परमात्मा अवश्य मिलते हैं।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

जैसे हाथ कट जाय तो वह कटा हुआ हाथ अपना नहीं दीखता, ऐसे ही यह शरीर अपना नहीं दीखना चाहिये। कटा हुआ हाथ कहीं फेंक दो, जला दो अथवा उसे कुत्ता ले जाय, क्या फर्क पड़ता है! जिस धातुका वह कटा हुआ हाथ है, उसी धातुका यह शरीर है। दोनों एक ही चीज है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

शरीर तो माँके पेटमें बना है, पर आप बने नहीं हो, आप आये हो। शरीर नष्ट होगा, आप नहीं। आप परमात्माके अंश हैं। जब परमात्मा कभी बूढ़े नहीं होते, कभी मरते नहीं, तो फिर उनका अंश बूढ़ा कैसे होगा? कैसे मरेगा? शरीर ही बूढ़ा होता है और मरता है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

जब संसारमें आये थे, तब पासमें कुछ नहीं था और जायँगे तो कुछ भी साथ चलेगा नहीं। अतः सेवा करनेसे अपना कुछ भी खर्च नहीं होता और अपना कल्याण कर सकते हैं मुफ्तमें!

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

मनुष्य भविष्यके लिये अन्न, धन आदिकी चिन्ता करता है। वास्तवमें मृत्युके बादकी चिन्ता करनी चाहिये। इस लोकमें तो अपने निर्वाहके लिये कर्जा भी ले लेंगे, पर परलोकमें क्या करेंगे?

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

मनुष्य सांसारिक वस्तु-व्यक्ति आदिसे जितना अपना सम्बन्ध मानता है, उतना ही वह पराधीन हो जाता है। अगर वह केवल भगवान्‌से अपना सम्बन्ध माने तो सदाके लिये स्वाधीन हो जाय।



—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

संसारके लिये करना ‘सेवा’ है। भगवान्‌के लिये करना ‘पूजा’ है। अपने लिये करना ‘बन्धन’ है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

हम किसी वस्तुके गुलाम क्यों बनें? मिल जाय तो ठीक, नहीं मिले तो नहीं सही। यह 'नहीं सही' बहुत बढ़िया मन्त्र है! कोई इच्छा नहीं रहे तो जीयें तो भी मौज, मरें तो भी मौज! मरनेसे पहले ही आपको तत्त्वज्ञान हो जायगा!

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

संसारकी चीजें माँगने की नहीं होतीं, वे तो प्रारब्धके अनुसार स्वतः मिलती हैं। माँगनेकी चीज है— भगवान्‌का विश्वास, भक्ति, प्रेम।



—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

यद्यपि जिस किसीमें जो भी विशेषता है, वह परमात्माकी है, तथापि जिनसे हमें लाभ हुआ है अथवा हो रहा है, उनके हम जरूर कृतज्ञ बनें, उनकी सेवा करें। परन्तु उनकी व्यक्तिगत विशेषता मानकर वहाँ फँस न जायँ—यह सावधानी रखें।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

भीतरसे
बार-बार पुकारो
'हे नाथ! मैं आपको
भूलूँ नहीं'। यह इतनी
बढ़िया चीज है, जो
आपका उद्धार कर
देगी।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

आपको अधिकार इतना बड़ा मिला हुआ है कि लाखोंका उद्धार कर सकते हैं, पर अपना भी उद्धार नहीं कर सके, यह कितनी शर्मकी बात है! अपना कल्याण करो या पतन करो, इसके लिये ये ही दिन हैं, नये दिन नहीं आयेंगे।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

जिन लोगोंने भजन-स्मरण किया है, आध्यात्मिक विचार किया है, उनको शान्ति मिली है। उनमें भी दुःख आता है तो दुःख दूर करनेके लिये दुःख आता है। उसका परिणाम अच्छा होगा, उनको शान्ति मिलेगी।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

आप जहाँ हैं, वहाँ ही परमात्माकी प्राप्ति करनी चाहिये। इसके लिये साधु बननेकी जरूरत नहीं है। गीताके अनुसार आप जिस आश्रममें हैं, वहीं परमात्माकी प्राप्ति हो जायगी। भगवान्‌के साथ सबका सीधा सम्बन्ध है। कारण कि सब भगवान्‌के अंश हैं।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

स्वाद और शौकीनीमें लगोगे तो भगवान्‌में रस पैदा नहीं होगा। जिस चीजका सेवन करो, निर्वाहबुद्धिसे करो। जितनी सादगी रखोगे, उतना बढ़िया है। जितनी शौकीनी करोगे, उतना पतन है। जितनी सादगी रखोगे, उतना खर्चा कम होगा, उतनी वृत्तियाँ ठीक रहेंगी, उतनी शान्ति रहेगी।



—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

एक पक्का विचार हो जाय तो बड़ी शान्ति मिलती है। प्रतिकूल परिस्थितिमें भी आनन्द आता है। परमात्माकी प्राप्तिमें देरी हो तो भी घबराहट नहीं होती। आज जो चित्तमें दुःख होता है, सन्ताप होता है, विचलित होते हैं, भोगोंमें मन जाता है, साधन ठीक नहीं होता है, इसका कारण यही है कि भीतरमें ध्येय पक्का नहीं है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

पारमार्थिक बातोंमें ज्यों-ज्यों गहरा उतरोगे, त्यों-त्यों वे समझमें आयेंगी। सांसारिक बातोंको ज्यों-ज्यों छोड़ोगे, त्यों-त्यों वे समझमें आयेंगी। भलाई करनेसे समझमें आयेगी, बुराई छोड़नेसे समझमें आयेगी।



—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

जो व्यक्ति खुद तो जानता नहीं और दूसरा बताये तो उसकी बात मानता नहीं, उसकी बड़ी दुर्दशा होती है!

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

गृहस्थ-जीवन ठीक नहीं, साधु हो जायँ, एकान्तमें चले जायँ—ऐसा विचार करके मनुष्य कार्यको तो बदलना चाहता है, पर कारण 'कामना' को नहीं छोड़ता; उसे छोड़नेका विचार ही नहीं करता।

यदि वह कामनाको छोड़ दे तो उसके सब काम अपने-आप ठीक हो जायँ।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

मैं पोथीकी पढ़ी हुई बात नहीं कहता हूँ, अपने अनुभवकी बात कहता हूँ। इच्छा करोगे तो वस्तु कठिनतासे मिलेगी, और इच्छा नहीं करोगे तो वस्तु सुगमतासे मिलेगी, अपने-आप मिलेगी, बढ़िया मिलेगी। उसकी गुलामी नहीं करनी पड़ेगी।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

कर्मयोगमें यह मानना ही होगा कि हमारे पास जो वस्तु, बल, योग्यता आदि है, वह दूसरोंके लिये ही है। ज्ञानयोगमें यह मानना ही होगा कि शरीर अपना नहीं है। भक्तियोगमें यह मानना ही होगा कि भगवान् मेरे हैं।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

वास्तवमें कोई भी मनुष्य अनाथ नहीं है। सब-के-सब मनुष्य सनाथ हैं। संसारमें प्रत्येक वस्तुका कोई-न-कोई मालिक होता है, फिर मनुष्यका कोई मालिक न हो—यह कैसे हो सकता है? जो सबके मालिक हैं, वे भगवान् हमारे भी मालिक हैं।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

संसारमें लाखों-करोड़ों घर हैं, अरबों आदमी हैं, अनगिनत रुपये हैं, पर उनकी चिन्ता नहीं होती; क्योंकि उनको वह अपना नहीं मानता। जिनको अपना नहीं मानता, उनसे तो मुक्त है ही। अतः ज्यादा मुक्ति तो हो चुकी है, थोड़ी-सी ही मुक्ति बाकी है!

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

अगर भगवान्‌में मन लगाना पड़ता है और संसारमें मन स्वाभाविक जाता है तो आप भले ही साधु हो गये, पर भगवान्‌के भक्त नहीं हुए!

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

देखनेमें विरक्त और दरिद्र—दोनोंकी एक दशा है, दोनोंके पास रुपये नहीं हैं; परन्तु दरिद्र रोता है और विरक्त आनन्दमें रहता है। वैराग्यमें जो आनन्द है, मस्ती है, वह रुपयोंमें नहीं है। रुपयोंवालेमें ऐसी मस्ती कभी आ नहीं सकती।



—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

जिसको प्राप्त वस्तु आदिमें सन्तोष नहीं है और अप्राप्तकी इच्छा होती है, वह 'दरिद्र' है। उसके पास धन न हो तो भी दरिद्र है, धन हो तो भी दरिद्र है। जिसको प्राप्तमें सन्तोष है और अप्राप्तकी इच्छा नहीं है, वह 'धनी' है। उसके पास धन न हो तो भी धनी है, धन हो तो भी धनी है।

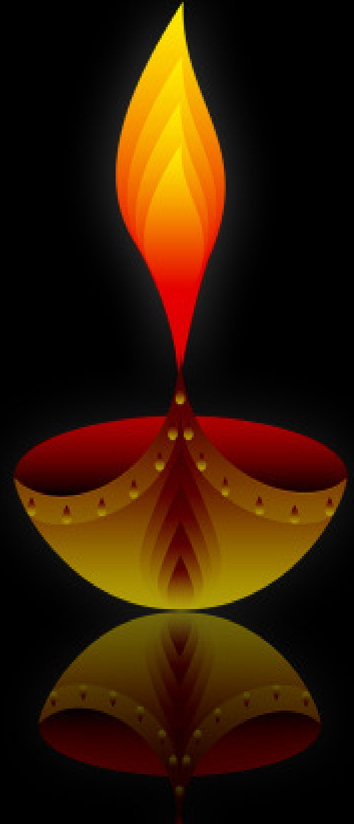


—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

मदिरापान गौहत्यासे भी बढ़कर महान् भयंकर पाप है! मांस खानेसे पाप लगता है, पर मदिरापानसे मनुष्यके अन्तःकरणमें स्थित धर्मकी रुचि, संस्कार, अंकुर नष्ट हो जाते हैं। इसके निर्माणमें असंख्य जीवोंकी हत्या होती है। गंगाजी सबको शुद्ध करनेवाली हैं। परन्तु यदि गंगाजीमें मदिराका पात्र डाल दिया जाय तो वह शुद्ध नहीं होता। जब मदिराका पात्र भी इतना अशुद्ध हो जाता है, तब मदिरा पीनेवाला कितना अशुद्ध हो जाता होगा—इसका कोई ठिकाना नहीं है!

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज



॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

सुख आता है तो वह भी नहीं ठहरता और दुःख आता है तो वह भी नहीं ठहरता; परन्तु परमात्माका आनन्द आता है तो वह कभी जाता ही नहीं, कभी मिटता ही नहीं, हरदम रहता है—

‘सदा दीवाली संत के, आठों पहर आनन्द’



—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

प्रत्यक्ष बात है कि आम, नींबू आदि के आचार का नाम लेने का इतना असर पड़ता है कि मुँहमें पानी आ जाता है! ऐसे ही भगवान् का नाम लेने का भी बहुत विलक्षण असर पड़ता है।



—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

शिष्य दुर्लभ है, गुरु नहीं। सेवक दुर्लभ है, सेव्य नहीं। जिज्ञासु दुर्लभ है, ज्ञान नहीं। भक्त दुर्लभ है, भगवान् नहीं।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

जो मनमें आये, वही करना पागलका काम है, पशुका काम है, मनुष्यका काम नहीं है। कार्य शास्त्र, गुरु आदिके आज्ञानुसार होता है। अपनी इच्छाके अनुसार (मनमाना) कार्य करनेवाला सन्त कैसे बन सकता है ? वह तो साधक भी नहीं बन सकता!

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

मनुष्य खुद तो भोगी बनता है, पर दूसरोंको त्यागी देखना चाहता है—यह अन्याय है। यदि उसे त्यागी अच्छा लगता है तो वह खुद त्यागी क्यों नहीं बनता?

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

दूसरोंसे अच्छा कहलानेकी इच्छा बहुत बड़ी निर्बलता है। इसलिये

अच्छे बनो,

अच्छे कहलाओ मत।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

खर्च न करो तो रुपये और रद्दी कागजमें, सोने और पत्थरमें क्या फर्क है? पैसा होना बड़ी बात नहीं है, उसका खर्च बड़ी बात है।



—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

ईश्वर कैसा है—यह विचार तो तब करें, जब हम उसे छोड़ सकें। जब हम उसे छोड़ ही नहीं सकते तो फिर वह कैसा ही हो, उससे हमें क्या मतलब?

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥



भगवान् का कहीं भी अभाव नहीं है। केवल उनको देखनेवाले का अभाव है।

भगवान् सब जगह मौजूद हैं, पर ग्राहक चाहिये। खम्भे कई हैं, पर प्रह्लाद चाहिये।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

खेल में छिपे हुए बालक को दूसरा बालक देख ले तो वह सामने आ जाता है कि अब तो इसने मुझे देख लिया, अब क्या छिपना! ऐसे ही भगवान् सब जगह छिपे हुए हैं। अगर साधक सब जगह भगवान् को देखे तो फिर भगवान् उससे छिपे नहीं रहेंगे, सामने आ जायँगे।



—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

दान-पुण्य करने के लिये रुपये कमाने की आवश्यकता नहीं है। कोई व्यक्ति टैक्स देने के लिये नहीं कमाता। दान-पुण्य भी टैक्स है। पैसा है तो दान-पुण्य में लगाओ। पैसा है, पर दान-पुण्य नहीं करते तो दण्ड होगा।



—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

सन्त-महात्मा संसारमें लोगोंको अपनी तरफ लगानेके लिये नहीं आते, प्रत्युत भगवान्‌की तरफ लगानेके लिये आते हैं। जो लोगोंको अपनी तरफ (अपने ध्यान, पूजन आदिमें) लगाता है, वह भगवद्द्रोही और नरकोंमें ले जानेवाला होता है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज



॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

साधक अपनेको भगवान्‌का समझकर संसारका काम करे तो संसारका काम भी ठीक होगा और भगवान्‌का काम भी। परन्तु अपनेको संसारका समझकर संसारका काम करे तो संसारका काम भी ठीक नहीं होगा और भगवान्‌का काम (भजन) तो होगा ही नहीं!

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

हम दूर-से-दूर जिस वस्तु
को मानते हैं, शरीर उससे
भी अधिक दूर है

और

नजदीक-से-नजदीक जिस वस्तु
को मानते हैं, परमात्मा उससे
भी अधिक नजदीक हैं।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

नामजपमें संख्या देखना उचित नहीं है। जिन भगवान्‌ने हमें अनगिनत चीजें दी हैं, उनका नाम हम गिनकर लें! गिनती इसलिये रखो कि हमारा नामजप कम न हो जाय। भगवान् गिनतीसे नहीं मिलते, प्रेमसे मिलते हैं।



—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

व्याख्यान देनेवाला व्यक्ति श्रोताओंको अपना मानने लग जाता है। किसीका भाई–बहन न हो, तो वह धर्मका भाई–बहन बना लेता है। किसीका पुत्र न हो, तो वह दूसरेका बालक गोद ले लेता है। इस तरह नये–नये सम्बन्ध जोड़कर मनुष्य चाहता तो सुख है, पर पाता दुःख ही है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

जो दीखता है, उस संसारको अपना नहीं मानना है, प्रत्युत उसकी सेवा करनी है और जो नहीं दीखता, उस भगवान्‌को अपना मानना है तथा उसको याद करना है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥



परमात्मप्राप्तिके मार्गकी कौन-सी ऐसी बाधा है, जिसका समाधान गीतामें नहीं हुआ? कल्याणकी ऐसी कौन-सी बात है, जो गुरुसे मिलती है, गीतासे नहीं मिलती? गीता एक अलौकिक ग्रन्थ है। गीता-जैसा ग्रन्थ मैंने देखा नहीं है। मैंने गीताको ही गुरु बनाया है!



—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

'फिर करेंगे'—यह महान् पतन करनेवाली बात है। ऐसे स्वभाववाले व्यक्तिका कल्याण होना कठिन है।

—परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज